माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

(2)

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी विशिष्ट	0 0 1	हिन्दी

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक 319- 21..512

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

0	2	9	1	3	2	8	1	4	8

शब्दों में

\	दो	नौ				आठ	एक	चार	आठ

BOARD OF SECONDARY EDUCATION

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जाये

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 07 शब्दों में सात

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक गैलरी - 2

ग :– परीक्षा का दिनांक 02 | 03 | 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायरसेकेण्डरी परीक्षा वर्ष-2019

केन्द्र क्रमांक-131012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

02/03/2019

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एव अंकों का योग सही है। निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्र... संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ता...

R.K. Bar...

G.H.S...

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जाए

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

desmat

2 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ अंक = कुल

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 1

रिक्त स्थान !-

(i) 'नये मेहमान' एकांकी मे आगंतुक (रेवती) का भाई है।

(ii) आधुनिक युग के ओजस्वी कवि (बालकृष्ण शर्मा नवीन) है।

(iii) लताजी के गायन की (गानपन) विशेषता है।

(iv) राजनीति मे जो साम्यवाद है, वही साहित्य मे (प्रगतिवाद) है।

(v) मुहावरा 'आँखे फेरना' का अर्थ (ध्यान न देना) है।

प्रश्न क्रमांक - 2

सही विकल्प !-

(i) उत्तर ! - (स) जयकुमार जलज।

3

योग पूर्व पृ 3 + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

(ii) उत्तर :- (अ) सातवे वर्ष मे।

(iii) उत्तर :- (द) इलाहबाद।

(iv) उत्तर :- (अ) चरन।

(v) उत्तर :- (अ) ऊँट के मूँह मे जीरा।

प्रश्न क्रमांक-3

सत्य / असत्य :-

(i) उत्तर :- सत्य।

(ii) उत्तर :- सत्य।

(iii) उत्तर :- सत्य।

(iv) उत्तर :- सत्य।

(v) उत्तर :- असत्य।

4

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ अंक	कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक -4

सही जोड़ी :-

क्र.	क	क्र.	ख
(i)	मंगल वर्षा	(5)	भवानी प्रसाद मिश्र
(ii)	अध्यक्ष महोदय	(3)	व्यंग्य निबंध
(iii)	मेरे जीवन के कुछ चित्र	(4)	डॉ. रामकुमार वर्मा
(iv)	लक्ष्यार्थ	(2)	भ्रांतिमान
(v)	रस के अंग	(1)	चार

प्रश्न क्रमांक -5

एक शब्द / वाक्य मे उत्तर :-

(i) उत्तर :- (i) मालवी (ii) निमाड़ी ।

(ii) उत्तर :- क्योंकि यह देह नश्वर है ।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

(iii) उत्तर:- व्यतिरेक अलंकार।

(iv) उत्तर:- आचार्य विनोबा भावे।

(v) उत्तर:- 50 हजारवे हिस्से के बराबर।

प्रश्न क्रमांक - 6 (अथवा)

उत्तर:- सभी देश हमारे यहाँ शिक्षा प्राप्ती के प्रायोजन से आते रहे है। भारतभूमि प्राचीन समय से ही ज्ञानदायनी के रूप मे विश्व मे प्रसिद्ध है।

प्रश्न क्रमांक - 7

उत्तर:- कबीर ने साधु पुरुष की संगति करने को कहा है। सत पुरुषो की संगति से सन्मार्ग पर चलने लगते है और लोक - परलोक सुधरते है।

P.T.O.

6 [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 6 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 8

उत्तर :- धरती बस मानव है, तो बसन्त मानवता है। यही नाता दोनो का है।

प्रश्न क्रमांक - 9

उत्तर :- केवट की जीविका का एकमात्र आधार उसकी नाव थी। वह नाव में सवारियाँ बैठाकर गंगा पार कराता था।

प्रश्न क्रमांक - 10

उत्तर :- चातक अपनी बोली द्वारा विरही हृदय को चोट पहुँचा रहा है। इसीलिए ने उसे घातक कहकर संबोधित किया गया है।

क्र.

प्रश्न क्रमांक - 11

उत्तर:- गौतम बुद्ध जीवन मे सुख रूपी अमृत को खोजने के लिए रात्रि मे बिना बताए अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को ~~छोड़~~ छोड़कर वनो मे चले गए थे।

प्रश्न क्रमांक - 12

उत्तर:- भाड़ का अभिषेक करने से पूर्व सूर्री रानी ने एक लात मारकर भाड़ के सिर को चकनाचूर कर दिया।

प्रश्न क्रमांक - 13 (अथवा)

उत्तर:- गाँव की संध्या मे पूजा भाव संस्० शंख - घड़ियालों की मिली - ~~जुली~~ स्वर - लहरी से स्पंदित होकर प्रकट होता है।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 8 के अंक = कुल अंक

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 14 (अथवा)

उत्तर :- एक समय था जब हमारा देश विश्व - गुरु के नाम से जाना जाता था, परन्तु आज पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण ने हमे हमारी प्राचीन संस्कृति और परम्पराओं को भूलने पर मजबूर कर दिया है। अतः पाश्चात्य संस्कृति को स्वीकारना ही 'आयतित अंधकार' है।

B
S
E

प्रश्न क्रमांक - 15

उत्तर :- (i) अब आपका स्वास्थ्य कैसा है?
(ii) उसके होश उड़ गये।

प्रश्न क्रमांक - 16

उत्तर :- महाकाव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(i) महाकाव्य का कलेवर विस्तृत होता है।
(ii) महाकाव्य में आठ या अधिक सर्गों का

प्रश्न क्र.

होना आवश्यक है।

प्रश्न क्रमांक - 17 (अथवा)

उत्तर :- गौरा के माँ बनने के पश्चात लेखिका के घर मानो 'दुग्ध महोत्सव' आरम्भ हो गया गौरा प्रातः सायं मिलाकर बारह सेर दूध देती थी। उसके बछड़े लालमणि के लिए कई सेर दूध छोड़ देने पर भी इतना अधिक दूध बच जाता था कि आस-पास के बाल-गोपाल से लेकर पालित कुत्ते-बिल्लीयों पर मानो 'दूधो-नहाओ' का आशीर्वाद फलित हो उठा हो अर्थात दूध प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो गया था।

प्रश्न क्रमांक - 19

उत्तर :- शृंगार रस - रति

सहृदय के हृदय मे 'रति' नामक स्थाई भाव का जब भाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग होता है वहाँ शृंगार रस होता है।

P.T.O.

+ =

योग पूर्व पृष्ठ

प्रश्न क्र.

उदाहरण :-

" राम को रूप निहारत जानकी,
कंकन के नग की परछाही।
याते सबै सुधि भूल गई,
कर टेकि रही पल टारत नाहीं ॥

प्रश्न क्रमांक - 18

B
S
E

उत्तर - भाषा और विभाषा में अन्तर निम्न है -

क्र.	भाषा	क्र.	विभाषा
(i)	भाषा, बोली का पूर्ण विकसित रूप है	(i)	विभाषा, बोली का अर्द्धविकसित रूप है।
(ii)	~~भाषा का~~ भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है	(ii)	विभाषा का क्षेत्र भाषा की अपेक्षा कम विस्तृत होता है।
(iii)	भाषा में प्रचुर साहित्य होता है।	(iii)	विभाषा में साहित्य अपेक्षाकृत कम होता है।

(11) + [ ] = [ ]

पृष्ठ 11 के अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 20

wrong

उत्तर :- द्विवेदी युग की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(i) देश-भक्ति :- इस युग के कवियों ने देशभक्ति - पूर्ण कविताओं का सृजन किया।

(ii) खड़ी बोली का परिनिष्ठित रूप :- इस काल के कवियो ने परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग किया है। और खड़ी बोली को परिमार्जित एवं व्याकरण सम्मत रूप प्रदान किया।

(iii) वर्णन प्रधान कविताएँ :- इस युग के कवियों ने प्रमुख रूप से वर्णन प्रधान कविताओं का सृजन किया।

(iv) अंधविश्वासों और रूढ़ियों का विरोध :- इस काल के कवियों ने अपनी रचनाओ के माध्यम से अंधविश्वासो और रूढ़ियों पर तीखे प्रहार किए।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 20 (अथवा)

उत्तर:- आत्मकथा की दो विशेषताएँ निम्न है-

(i) आत्मकथा स्वयं लेखक द्वारा ही लिखी जाती है।

(ii) आत्मकथा मे लेखक तटस्थ नही रहता और अपने जीवन पर पड़े प्रभावों का वर्णन अवश्य करता है।

आत्मकथा लेखक - आत्मकथा

(i) हरिवंश राय बच्चन - क्या भूलूँ क्या याद करूँ।

(ii) महात्मा गाँधी - सत्य के प्रयोग।

प्रश्न क्रमांक - 21

उत्तर:- प्रगतिवादी कवि - रचनाएँ

(i) शिवमंगल सिंह सुमन - 'हिल्लोल'।

(ii) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - कुकुरमुत्ता।

प्रश्न क्र.

विशेषताएँ :- (i) नारी शक्ति का स्वर मुखरित हुआ है।

(ii) सामाजिक यथार्थ का चित्रण एवं साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग।

प्रश्न क्रमांक - 22

*** शरद जोशी**

रचनाएँ :- (i) अंधों का हाथी।
(ii) एक था गधा।

भाषा शैली :- शरद जी की भाषा सहज, सरल और सुबोध है। शब्दों का सटीक चयन है। भाषा मे प्रवाहमयता है। शरद जी की रचनाओं मे व्यंग्यात्मकता है, कहावतो और मुहावरो का प्रयोग भी इनकी रचनाओ मे देखने को मिलता है। इनकी रचनाओं मे हास्य परिहास का हल्का पुट और ~~कुछ~~ चुटीलापन है।

शरद जी ने प्रमुख रूप से हास्य व्यंग्य प्रधान शैली का प्रयोग किया है। इन्होंने

P.T.O.

B
S
E

14 [ ] + [ ] =
पृ० अंक

प्रश्न क्र.

अपनी आलोचना मे आलोचनात्मक शैली और भेटवार्ता मे संवाद शैली का प्रयोग किया है।

साहित्य मे स्थान :- जोशी जी का हिन्दी साहित्य मे अभूतपूर्व स्थान है। इन्होने अपने व्यंग्य लेखो के माध्यम से समाज की विसंगतियों पर तीखे प्रहार किए। इनकी रचनाओं मे लोकप्रियता अपने चरम पर पहुँची है। हिन्दी व्यंग्य साहित्य मे जोशी जी का महत्वपूर्ण स्थान है।

B
S
E

प्रश्न क्रमांक - 23

* जयशंकर प्रसाद

रचनाएँ :- (i) आँसू
(ii) कामायनी।

भाव -पक्ष :- जयशंकर प्रसाद जी ने हिन्दी साहित्य के गौरवपूर्ण स्थान के रूप को अपने साहित्य मे उभारा है।

प्रश्न क्र.

प्रसाद जी छायावाद के जनक और प्रतिनिधि कवि है। उनकी रचनाओ मे प्रेम और आनन्दवाद की अनुपम आभा है। उन्होने राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम को अपनी रचनाओं मे जाग्रत किया है। नारी के प्रति सहानुभूति और सम्मान की भावना के साथ इन्होने प्रकृति के अभिराम चित्र प्रस्तुत किए है। इनका महाकाव्य 'कामायनी' सरसता का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

कला - पक्ष :-

भाषा :- प्रसाद जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। ~~उन्हो~~ उनकी भाषा विषयो के अनुकूल है।

शैली :- प्रसाद जी की रचनाओ मे प्रतीकात्मक और अभिव्यंजन शैली का मादक वसन्त अपनी आभा बिखेरता हुआ प्रतीत होता है। उनका महाकाव्य 'कामायनी' प्रबन्ध काव्य शैली का श्रेष्ठ उदाहरण है।

छंद :- प्रसाद जी ने अपनी रचनाओ मे पारम्परिक छंदो के साथ - साथ जीवन छन्दो का प्रयोग करके अपनी मौलिकता का परिचय दिया है।

अलंकार :- प्रसाद जी की अलंकार योजना अत्यंत रोचक और अनूठी है उन्होने

P.T.O.

BSE

16

अंक अंक

प्रश्न क्र.

मानवीकरण, विश्लेषण, विपर्यय आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान :- आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रसाद जी का श्रेष्ठ स्थान है। प्रसाद जी छायावाद के आधार स्तम्भ और जनक माने जाते हैं। इन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हिन्दी साहित्य के नए युग का सूत्रपात किया।

BSE

प्रश्न क्रमांक - 24 (अथवा)

संकेत :- यह संसार - - - - - - - - सार्थकता है।

संन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक स्वाति के 'खेल' नामक पाठ से अवतरित है। इसके लेखक सुप्रसिद्ध कहानीकार 'जैनेन्द्र कुमार जी' है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियो मे लेखक संसार की नश्वरता के बारे मे बता रहा है।

व्याख्या :- लेखक कहता है कि यह संसार नश्वर है। इसमे सुख या दुःख कुछ

17 + [ ] =
पृष्ठ 17 के अंक

प्रश्न क्र.

नही है। सभी समान ही है। जो जिसका बना है अर्थात शरीर मिट्टी का बना है वह मृत्यु के ~~प्रश्नात~~ उ ~~प्र~~ पश्चात उसी मे मिल जाएगा। इसमे दुःख की कोई बात नही है। लेखक पानी के बुदबुदे का उदाहरण देते हुए कहता है कि शरीर पानी के बुदबुदे के समान है जिसकी फूट जाने अर्थात नष्ट हो जाने मे ही सार्थकता है।

विशेष :- (i) भाषा सहज व बोधगम्य है।
(ii) संसार की नश्वरता का वर्णन
(iii) उदाहरण द्वारा भाव का स्पष्टिकरण है।
(iv) वाक्य सरल है।

प्रश्न क्रमांक - 25 (अथवा)

संकेत :- मैया कबहि - - - - - - - भुई लोटी।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत पदांश हमारी पाठ्य - पुस्तक स्वाति के 'सूर के बालकृष्ण' नामक पाठ से अवतरित है। इसके रचयिता 'वात्सल्य सम्राट 'सूरदास' जी' है।

प्रसंग :- बालकृष्ण अपनी माँ यशोदा से अपनी चोटी न बढने की बात कह रहे और इनका कहना है कि माँ के अनुसार द्रहा

P.T.O.

प्रश्न क्र.

धीमे से चोटी बढ़ती है।

व्याख्या :- बाल कृष्ण कहते है कि माँ मेरी चोटी कब बढ़ेगी। तू कितनी बार मुझे गाय का दूध पिलाती है पर ये तो अभी भी इतनी ही छोटी-सी है। तू तो कह रही थी कि मेरी चोटी बलदाऊ के समान लम्बी की चोटी के समान लम्बी हो जाएगी और मोटी हो जाएगी और उसे काढ़ते अर्थात बाल बनाते समय वह भू पर लोट जाया करेगी नागिन के समान लोट जाया करेगी। परन्तु यह अब तक छोटी है।

काव्य सौन्दर्य :- (i) वात्सल्य रस का प्रयोग।
(ii) माधुर्य गुण द्रष्टान्त है।
(iii) कृष्ण की बाल सुलभ लीला का वर्णन।

प्रश्न क्रमांक - 25

वैदिक काल - - - - जीवन देती है।

(i) शीर्षक :- 'पवित्र हिमालय।'

प्रश्न क्र.

(ii) वैदिक काल से ही हिमालय को पवित्र माना जाता है।

(iii) हिमालय को देखकर मन मे आनंद और कृतज्ञ भाव उत्पन्न हो जाते है

(iv) यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ, ~~हिमा~~ गंगोत्री और यमुनोत्री जैसे पवित्र तीर्थ है।

(v) शब्द — प्रत्यय

~~(i) कृतज्ञता~~
(i) कृतज्ञता — ता।
(ii) वैदिक — इक।

[P.T.O.]

\+ [पृ] [अंक] = [ ]

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 27 (अथवा)

सेवा मे,
श्रीमान नगरपालिका अध्यक्ष
लहार, भिण्ड (म.प्र.)

विषय :- कॉलोनी मे सफाई न होने की बात से अवगत करने हेतु।

महोदय,
मै आपका ध्यान, नवविकसित कॉलोनी 'रूपरंग' की ओर अ० मे नियमित साफ - सफाई न होने की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। यहाँ पर रोज सफाई नही होती, जगह - जगह कचरे के ढेर लगे रहते है। जिससे मच्छरों का प्रकोप और बीमारीयाँ फैल रही जिससे समस्त लोग परेशान है।

अतएव मै आपसे, हमारी कॉलोनी मे नियमित साफ - सफाई करवाने के लिए नगर पालिका कर्मचारियों को निर्देश देने का अनुरोध करना चाहती हूँ। हमने पहले भी इस बारे मे अन्य कर्मचारीयो को लिखा है पर कोई प्रभाव नही हुआ। आशा करती हूँ इस बार आप हमे निराश नही करेगें।

निवेदक
'अ' 'ब' 'स'
रूपरंग कॉलोनी
लहार, भिण्ड (म.प्र.)

सधन्यवाद!
दिनांक - 02-03-2019

B
S
E

[ ] + [ ] = [ ]

पृ क कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 28

(ब) रूपरेखा

(iii) जल संरक्षण

" रहिमन पानी राखिए,
बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे
मोती - मानस - चून ॥ "

(i) प्रस्तावना
(ii) जल का महत्व
(iii) जल के उपयोग - (i) कृषि मे
(ii) उद्योगो में
(iii) घरेलू कार्यो में।

(iv) जल का दुरुपयोग
(v) जल संरक्षण का महत्व
(vi) जल संरक्षण आवश्यक
(vii) जल संरक्षण के उपाय
(viii) उपसंहार।

P.T.O.

प्रश्न क्र.

(अ) निबंध

(iii) नारी है तो कल है।

(1) प्रस्तावना ।
(2) प्राचीन काल मे नारी।
(3) प्राची मध्यकाल मे नारी।
(4) आधुनिक युग मे नारी।
(5) उपसंहार।

B S E

"नारी तुम श्रद्धा हो, विश्वास रजत पग-पग तल में,
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"

(1) प्रस्तावना !- नारी सम्पूर्ण मानव जाति की सृष्टि का मूल आधार है। नारी के बिना नर अपूर्ण है। नारी माँ, पत्नि बहन, प्रेयसी आदि अनेक रूपो मे समाज के लिए समर्पित है। समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए है एक नर है तो दूसरी नारी। नारी सम परिस्थितियों मे देवी है और विषम परिस्थितियो मे दानवी। नारी के बिना सम्पूर्ण मानव जीवन रसहीन है।

(2) प्राचीन काल मे नारी !- नारी प्राचीन काल से ही सामाजिक और आध्यात्मिक क्षेत्र मे पुरूषों की सहभागिनी थी। गार्गी ने ऋषि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ

प्रश्न क्र.

किया था। इसी सन्दर्भ, कैकयी ने देवासुर संग्राम मे राजा दशरथ के रथ की धुरि टूटने पर उसे हाथ से रोककर दुर्घटना होने से रक्षा की थी। इसी सन्दर्भ मे द्रोपदी, अनुसुइया, सुलोचना आदि नारीयो मे सन्दर्भ प्रस्तुत किए है महाभारत काल मे द्रोपदी ने पाण्डवों को अन्याय के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा दी। कुन्ती आदर्श माँ, द्रोपदी आदर्श शक्ति के रुप मे इतिहास मे प्रसिद्ध है। नारी की प्रसंसा मे निम्न उदाहरण देना प्रासंगिक होगा। —

" गृहं गृहणी हीनं, अरण्यं सदृश्यमतम ।"

अर्थात् नारी रहित घर जंगल के समान है।

(3) मध्य युग मे नारी :- मध्य युग मे नारी का सम्मान करने हेतु गौतम बुद्ध ने उपदेश दिए परन्तु बौद्ध काल मे नारी के गौरव में कमी आने लगी। और मध्यकाल मे नारी को शासको की काम लोलुप दृष्टि से बचाने के प्रयास किए जाने लगे जिसके फलस्वरुप उसे पर्दे मे रखा जाने लगा। और उसका जीवन घर की चार दीवारो तक सीमित रह गया और वह पुत्री के रुप मे पिता पर, माँ के रुप मे पुत्र पर और पत्नी के रुप मे पति पर आश्रित होती चली गई।

P.T.O.

प्रश्न क्र.

परन्तु भारतीय नारी ने अपने गौरवपूर्ण रूप को खोया नही था वह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती और अहिल्याबाई की तलवारों मे चमक उठा। परन्तु मध्य काल मे नारी कि स्थिती निम्न पंक्तियो द्वारो स्पष्ट होती है -

" अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी,
आँचल मे है दूध, आँखो मे है पानी।"

भक्ति काल मे नारी मानव जीवन के लिए इतनी क्षुद्र और उपेक्षित हो गई थी कि उस काल के बड़े - बड़े कवियो ने उसकी संवेदना और सहानुभूति मे दो शब्द तक नही लिखे। जबकि तुलसी जैसे महाकवि ने नारी को प्रताडना का अधिकारी कहा है उनकी पंक्ति निम्नलिखित है -

" ढोल, गँवार, क्षुद्र, पशु, नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी ।।"

(4) आधुनिक युग मे नारी :- आधुनिक युग मे नारी मान के प्रति मानव के दृष्टिकोण मे अन्तर आ रहा था उसका भाग्य करवट बदल रहा था। इस युग मे राजा राममोहन राय ने नारी की स्वतंत्रता हेतु अपनी आवाज बुलन्द की। दयानन्द सरस्वती ने नारी को पुरुषो के ~~समानाधिकि~~ समानाधिकारणी होने का अधिकार दिया।

P.T.O.

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी	02 03 019

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

0 2 9 1 3 2 8 1 4 8

शब्दों में

शून्य दो नौ एक तीन दो आठ एक चार आठ

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

केन्द्र क्रमांक-131012

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

श्री R. राकेश शील

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका ... म पृष्ठ क्रमांक 24 ... तक कुल प्राप्तांक

महात्मा गाँधी ने भी नारी शक्ति हेतु अपनी आवाज बुलन्द की। छायावाद के प्रमुख कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने भी नारी को मुक्त करने हेतु तीव्र स्वर मे माँग की -

" मुक्त करो नारी को मानव,
चिर बन्दनी नारी को।
युग - युग की निर्मम कारा से
जननी सखी प्यारी को ॥

नारी के महत्व का प्रतिपादन छायावाद के जनक जयशंकर प्रसाद ने भी बड़े ही सुन्दर ढंग से किया -

" नारी तुम श्रद्धा हो
विश्वास रजत पग - पग तल में

P.T.O.

B S E

के अंकों का योग

प्रश्न क्र.

पीयूष स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में।"

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद नारी की स्थिती सुधारने हेतु सरकार ने भी प्रयास प्रारम्भ कर दिए। विवाह कानून मे परिवर्तन और दहेज विरोधी कानून बनाए गए है। जिससे नारी अभिशाप मुक्त हो सके।

उपसंहार :- नारी सदैव से ही समर्पण, शक्ति शौर्य की साक्षात प्रतिमूर्ति रही है। नारी ने अपने इन्ही गुणो का अनुसरण करके अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखा है। और वह हर स्थान पर पुरुषो की सहभागिनी रही है। मध्यकाल मे नारी की स्थिति दयनीय रही परन्तु आधुनिक युग मे आते - आते उसने अपनी खोई प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। प्राचीन ग्रन्थो और उपनिषदो ने नारी के महत्व को अक्षुण्ड रखा है। कवियों और ग्रन्थो मे नारी के महत्व का प्रतिपादन इस प्रकार किया है -

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।"

अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहीं देवता वास करते है

(3)

प्रश्न क्र.

वर्तमान मे नारी पाश्चात संस्कृति और भोगवाद का अनुसरण करते हुए पतन की ओर जा रही है परन्तु भारतीय जन-जीवन मे यह परम्परा प्रतिष्ठित नही हो पाई है। भारतीय नारी अपनी संस्कृति और परम्पराओ का अनुसरण करके नवीन उपमानो को प्राप्त करेगी।

" अपमान मत करो नारी का
इन्ही के बल पर जग चलता है।
पुरुष जन्म लेकर तो इन्ही की गोद मे पलता है"

B
S